ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

04 November 2024

डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर ग्रोथ इनिशिएटिव (डिजी फ्रेमवर्क)

संदर्भ: हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और दक्षिण कोरिया ने भारत में डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण पहल की घोषणा की है। इस पहल को डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर ग्रोथ इनिशिएटिव (डिजी फ्रेमवर्क) नाम दिया गया है।

- इसका उद्देश्य भारत में प्रमुख डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के संचालन को सुव्यवस्थित करना है, जिससे भारत में आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा मिलेगा और क्षेत्रीय विकास को नई दिशा प्राप्त होगी।

डिजी फ्रेमवर्क के प्रमुख साझेदार:

- डिजी फ्रेमवर्क के अंतर्गत तीन प्रमुख संगठनों का सहयोग शामिल है:
  - अमेरिकी अंतर्राष्ट्रीय विकास वित्त निगम (DFC)
  - जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बैंक (JBIC)
  - कोरिया का निर्यात-आयात बैंक (कोरिया एक्जिमबैंक)
- ये संस्थान भारत की डिजिटल अवसंरचना आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु अपने संसाधनों और विशेषज्ञता का योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

प्रमुख फोकस क्षेत्र:

- इस ढांचे में विभिन्न डिजिटल तकनीकों और बुनियादी ढांचे में निवेश और विकास के कई प्राथमिक फोकस क्षेत्र तय किए गए हैं, जिनमें शामिल हैं:
  - 5जी प्रौद्योगिकी
  - ओपन आरएएन (ओपन रेडियो एक्सेस नेटवर्क)
  - पनडुब्बी केबल
  - ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क
  - दूरसंचार टावर
  - डेटा सेंटर
  - स्मार्ट शहर
  - ई-कॉमर्स
  - कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)
  - क्वांटम प्रौद्योगिकी
- इन क्षेत्रों का विकास भारत के डिजिटल परिदृश्य को गति प्रदान करेगा और सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित करेगा।

डिजी फ्रेमवर्क में निजी क्षेत्र की भूमिका:

- डिजी फ्रेमवर्क का एक प्रमुख उद्देश्य भारत के निजी क्षेत्र के साथ सहयोग को प्रोत्साहित करना है। इस ढांचे के तहत भारत की अवसंरचना आवश्यकताओं को पूरा करने और प्रभावी नीति संवाद को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है।
- यह दृष्टिकोण डिजिटल परियोजनाओं में निजी वित्तपोषण को बढ़ावा देगा, जिससे निजी क्षेत्र के हितधारकों की भागीदारी सुगम होगी।

रणनीतिक उद्देश्य:

- डिजी फ्रेमवर्क का उद्देश्य अमेरिका-जापान-कोरिया गणराज्य त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन में स्थापित लक्ष्यों के अनुरूप तीनों देशों के बीच सहयोग और साझा प्राथमिकताओं को बढ़ाना है। इस पहल से भारत के डिजिटल परिदृश्य को सशक्त बनाने और आर्थिक विकास में योगदान का लक्ष्य है।

भारत के प्रति प्रतिबद्धता:

- डिजी फ्रेमवर्क के तहत डीएफसी, जेबीआईसी और कोरिया एक्जिमबैंक की साझेदारी भारत की डिजिटल अवसंरचना के प्रति प्रतिबद्धता दिखाती हैं। इनका उद्देश्य निजी क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग कर भारत में डिजिटल अवसंरचना में उच्च गुणवत्ता वाले निवेश को बढ़ावा देना है, जिससे देश के विकास को समर्थन मिले।

डिजिटल अवसंरचना के बारे में:

- डिजिटल अवसंरचना से तात्पर्य उन प्रौद्योगिकियों से है, जो संगठन की सूचना प्रौद्योगिकी और परिचालन का आधार बनती हैं। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत भारत की डिजिटल अवसंरचना ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

महत्वपूर्ण पहल:

- **डिजिटल पहचान:** आधार एक 12-अंकीय बायोमेट्रिक और जनसांख्यिकी आधारित पहचान है, जिसमें 135.5 करोड़ से अधिक निवासियों का नामांकन है, जो एक अद्वितीय, आजीवन, ऑनलाइन और प्रामाणिक पहचान प्रदान करता है।
- **डिजिटल सेवाएं:** सामान्य सेवा केंद्र (सीएससी) 5.21 लाख केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम स्तरीय उद्यमियों द्वारा 400 से अधिक डिजिटल सेवाएं प्रदान करते हैं।
- **डिजिटल लॉकर:** डिजिलॉकर के 13.7 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता हैं, जिसमें 2,311 जारीकर्ता संगठनों के 562 करोड़ से अधिक दस्तावेज

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

संग्रहीत हैं।

- **डिजिटल हस्ताक्षर:** ई-साइन सुविधा के माध्यम से 31.08 करोड़ से अधिक ऑनलाइन हस्ताक्षर किए गए हैं।
- **डिजिटल गांव:** डिजिटल गांव पायलट परियोजना 700 ग्राम पंचायतों/गांवों को कवर करती है, जोकि डिजिटल स्वास्थ्य, शिक्षा, वित्तीय सेवाएं और कौशल विकास प्रदान करती है।'
- **ई-डिस्ट्रिक्ट सेवाएं:** ई-डिस्ट्रिक्ट भारत के 709 जिलों में 4,671 ई-सेवाएं उपलब्ध कराता है।

प्रकृति संरक्षण सूचकांक में भारत की चिंताजनक रैंकिंग

सन्दर्भ: हाल ही में जारी प्रकृति संरक्षण सूचकांक (NCI) में भारत की स्थिति ने पर्यावरण नीतियों और संरक्षण प्रयासों के बारे में गंभीर चिंताएँ उत्पन्न की हैं। भारत इस सूचकांक में 180 देशों में से 176वें स्थान पर है और इसे 100 में से केवल 45.5 अंक प्राप्त हुए हैं। यह रिपोर्ट भारत के प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा में आने वाली गंभीर चुनौतियों को उजागर करती है।

मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र:

प्रकृति संरक्षण सूचकांक चार आवश्यक स्तंभों के आधार पर देशों का मूल्यांकन करता है:

- **संरक्षित क्षेत्रों का प्रबंधन:** अपने राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों की सुरक्षा में भारत का प्रदर्शन अपर्याप्त माना गया है। जबकि इसकी स्थलीय भूमि का 7.5% हिस्सा संरक्षित के रूप में नामित है, यह देश की जैव विविधता की आवश्यकताओं को देखते हुए अपर्याप्त है।
- **जैव विविधता के लिए खतरों से निपटना:** सूचकांक के अनुसार पारिस्थितिकी तंत्र पर मानवीय गतिविधियों का प्रभाव एक महत्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है। भारत विभिन्न खतरों को कम करने के लिए संघर्ष कर रहा है, जिनमें आवास विनाश और प्रदूषण शामिल हैं, जो इसकी समृद्ध जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।
- **प्रकृति और संरक्षण शासन:** सूचकांक भारत के पर्यावरण कानूनों और नीतियों में कमियों को उजागर करता है। वर्तमान शासन ढांचा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत प्रबंधन की तत्काल आवश्यकता को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करता है।
- **भविष्य का परिदृश्य:** सतत विकास के प्रति भारत के दृष्टिकोण में गंभीर कमी है, जैसा कि इस क्षेत्र में इसके कम स्कोर से स्पष्ट होता है। नवीन रणनीतियों और प्रभावी कार्यान्वयन की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।

समुद्री संरक्षण के क्षेत्र में विफलता:

- एनसीआई रिपोर्ट का सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि समुद्री संरक्षित क्षेत्रों के प्रबंधन और समुद्री प्रजातियों की सुरक्षा में भारत का स्कोर 100 में से 0 है। भारत के राष्ट्रीय जल का केवल 0.2% ही संरक्षण में है, और अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में कोई कवरेज नहीं है। यह स्पष्ट कमी व्यापक समुद्री संरक्षण रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को उजागर करती है।

तुलनात्मक प्रदर्शन:

- भारत के पड़ोसी देशों की तुलना में यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है। बांग्लादेश, पाकिस्तान, म्यांमार और चीन जैसे देशों ने संरक्षण प्रयासों के मामले में भारत से बेहतर प्रदर्शन किया है। भूटान इस क्षेत्र में सफलता के एक मॉडल के रूप में सामने आया है, जो संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए दुनिया भर में शीर्ष 15 देशों में शामिल है।

प्रकृति संरक्षण सूचकांक (एनसीआई) के बारे में:

- एनसीआई को गोल्डमैन सोननफेल्ड स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी एंड क्लाइमेट चेंज ने बायोडीबी डॉट कॉम के सहयोग से विकसित किया है। इस पहल का उद्देश्य एक स्पष्ट, निष्पक्ष माप उपकरण बनाना है, जिससे यह पता लगाया जा सके कि देश प्राकृतिक संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों का कितनी अच्छी तरह से प्रबंधन करते हैं।

मूल्यांकन के लिए मापदंड:

- प्रकृति संरक्षण सूचकांक (एनसीआई) चार मूल्यांकन स्तंभों के अंतर्गत 25 विशिष्ट मापदंडों के आधार पर देशों का मूल्यांकन करता है। भारत ने कुछ क्षेत्रों में, विशेष रूप से पारिस्थितिक विविधता के संदर्भ में सुधार को प्रदर्शित किया है। हालाँकि, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण और समग्र शासन में मौजूद महत्वपूर्ण कमजोरियों ने बढ़ा दी है।

प्रकृति संरक्षण सूचकांक के उद्देश्य:

- प्रकृति संरक्षण सूचकांक (एनसीआई) का उद्देश्य एक व्यापक वार्षिक मूल्यांकन प्रस्तुत करना है, जो पर्यावरण अनुसंधान को मार्गदर्शन प्रदान

कर सके और नीति निर्माताओं को सूचित कर सके। यह वैश्विक स्तर पर संरक्षण प्रयासों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करता है। साथ ही, यह देशों को अपने प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा में निर्णायक कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सेमाग्लूटाइड: मधुमेह और अल्जाइमर के जोखिम के लिए दोहरा समाधान

सन्दर्भ: हाल ही में अल्जाइमर एंड डिमेंशिया में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार टाइप 2 मधुमेह और वजन प्रबंधन के लिए व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली दवा सेमाग्लूटाइड में अल्जाइमर रोग के जोखिम को कम करने की पर्याप्त क्षमता है।

अल्जाइमर रोग के बारे में:

- **रोग की प्रकृति:** अल्जाइमर रोग में स्मृति, सोच, व्यवहार और सामाजिक कौशल में धीरे-धीरे गिरावट आती है, जिससे यह मनोभ्रंश का सबसे प्रचलित कारण बन जाता है।
- **मरीजों पर प्रभाव:** जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती है, व्यक्तियों को दैनिक कार्यों और जीवन की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष:

- **कम अल्जाइमर जोखिम:** टाइप 2 मधुमेह से पीड़ित जिन वयस्कों को सेमाग्लूटाइड निर्धारित किया गया था, उनमें अन्य मधुमेह-रोधी दवाएं लेने वालों की तुलना में अल्जाइमर विकसित होने का जोखिम काफी कम पाया गया।
- **तुलनात्मक प्रभावशीलता:** सेमाग्लूटाइड के कारण जोखिम में 40% से 70% तक की कमी देखी गई, जो अन्य GLP-1 रिसेप्टर एगोनिस्ट सहित अन्य मधुमेह दवाओं से बेहतर प्रदर्शन करती है।
- **निरंतर लाभ:** अल्जाइमर रोग का कम जोखिम विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों में स्थिर रहा, जिसमें आयु, लिंग और मोटापे की स्थिति शामिल थी।

अनुसंधान क्रियाविधि:

- केस वेस्टर्न रिजर्व स्कूल ऑफ मेडिसिन के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए इस अध्ययन में टाइप 2 मधुमेह से पीड़ित लगभग 1 मिलियन अमेरिकी रोगियों के इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड का विश्लेषण किया गया।
- मरीजों पर तीन वर्षों तक नजर रखी गई, जिससे सेमाग्लूटाइड और इंसुलिन, मेटफॉर्मिन सहित सात अन्य मधुमेह दवाओं के बीच गहन तुलना की जा सकी।

न्यूरोप्रोटेक्टिव प्रभाव:

- **क्रियाविधि:** माना जाता है कि अल्जाइमर के जोखिम को कम करने में सेमाग्लूटाइड की क्षमता इसके न्यूरोप्रोटेक्टिव प्रभावों से उत्पन्न होती है, जिसमें शामिल हैं:
  - **बीटा-अमाइलॉइड जमाव में कमी:** यह जमाव अल्जाइमर की पहचान है, जो संज्ञानात्मक गिरावट से जुड़ी होती है।
  - **बेहतर ग्लूकोज चयापचय:** मस्तिष्क में बेहतर ग्लूकोज संचार संज्ञानात्मक कार्य को समर्थन दे सकता है।
  - **तंत्रिका-सूजन को कम करना:** अल्जाइमर से जुड़ी सूजन को कम करके, सेमाग्लूटाइड मस्तिष्क स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद कर सकता है।

अल्जाइमर के उपचार पर प्रभाव:

- अल्जाइमर के लिए वर्तमान उपचार, जैसे कि बायोजेन का लेकेम्बी, एमिलॉयड प्लेक को लक्षित करने पर केंद्रित हैं, लेकिन इनमें महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव हो सकते हैं।
- सेमाग्लूटाइड जैसे GLP-1 रिसेप्टर एगोनिस्ट दोहरा लाभ प्रदान कर सकते हैं, वे मधुमेह को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के साथ-साथ मनोभ्रंश के जोखिम को कम करने में भी सहायक हैं।

भारत के लिए महत्व:

- भारत में टाइप 2 मधुमेह की दर विश्व स्तर पर सबसे अधिक है, जो संज्ञानात्मक गिरावट में वृद्धि से संबंधित है। मनोभ्रंश के खिलाफ निवारक रणनीति के रूप में GLP-1 दवाओं की शुरूआत भारत की वृद्ध आबादी के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली हो सकती है। यह उन परिस्थितियों में नई उम्मीद की किरण प्रस्तुत करती है जहां वर्तमान में बहुत कम निवारक उपाय उपलब्ध हैं।

मैग्नेटोमेट्री के माध्यम से परमाणु घड़ियों में प्रगति

- **सन्दर्भ:** हाल ही में रमन अनुसंधान संस्थान (आरआरआई) के शोध कर्ताओं ने परमाणु घड़ियों और मैग्नेटोमीटर की संवेदनशीलता में

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

वृद्धि हेतु क्वांटम मैग्नेटोमेट्री का उपयोग किया है। इस नवाचार के परिणामस्वरूप उपकरणों की संवेदनशीलता में दस गुना वृद्धि देखी गई है, जिससे इन उपकरणों की परिशुद्धता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

- हाल के क्वांटम मैग्नेटोमेट्री विकास ने परमाणु घड़ियों की सटीकता और विश्वसनीयता में काफी सुधार किया है, जो नेविगेशन, दूरसंचार और विमानन जैसे क्षेत्रों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।
- न्यू जर्नल ऑफ फिजिक्स में प्रकाशित इस अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि कमरे के तापमान पर क्वांटम प्रभावों का उपयोग किया जा सकता है, जिससे प्रयोग आसान हो जाता है।

रिडबर्ग परमाणु और इलेक्ट्रोमैग्नेटिकली इंड्यूस्ड ट्रांसपेरेंसी (ईआईटी) के बारे में:

- रिडबर्ग परमाणु ऐसे परमाणु होते हैं जो बहुत उत्तेजित होते हैं। इनमें एक या एक से अधिक इलेक्ट्रॉनों होते है और इनकी मुख्य क्वांटम संख्या बहुत उच्च होती है।
- इस उत्तेजना को मापने के लिए इलेक्ट्रोमैग्नेटिकली इंड्यूस्ड ट्रांसपेरेंसी (EIT) तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। EIT किसी अपारदर्शी माध्यम को कुछ खास स्थितियों में पारदर्शी बना सकती है, जिससे प्रकाश को बेहतर तरीके से नियंत्रित किया जा सकता है।
- क्वांटम हस्तक्षेप का सिद्धांत इस घटना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब परमाणु क्वांटाइज्ड ऊर्जा स्तरों के बीच संक्रमण करते हैं, तो उनके कई मार्ग एक-दूसरे को बढ़ा सकते हैं या रद्द कर सकते हैं। यह हस्तक्षेप एक ऐसी स्थिति को जन्म दे सकता है जहां कुछ प्रकाश आवृत्तियों को कम अवशोषित किया जाता है, जिससे माध्यम प्रभावी रूप से पारदर्शी हो जाता है।

मैग्नेटोमेट्री में नवाचार:

- शोधकर्ताओं ने यह मापने के लिए राइडबर्ग ईआईटी का इस्तेमाल किया कि थर्मल रूबिडियम परमाणु कमरे के तापमान पर चुंबकीय क्षेत्रों पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। उनके अभिनव दृष्टिकोण ने डॉपलर प्रभाव का लाभ उठाया, जिससे राइडबर्ग परमाणुओं की चुंबकीय क्षेत्र प्रतिक्रिया में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- टीम ने पाया कि डॉप्लर शिफ्ट की क्षतिपूर्ति किए बिना, एक अद्वितीय विन्यास में रिडबर्ग ईआईटी का विश्लेषण करने से चुंबकीय क्षेत्र के प्रति बेहतर प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।
- परमाणुओं की गति के कारण होने वाले डॉप्लर प्रभाव को संवेदन में एक सीमा के रूप में देखा जाता है, हालाँकि, इस शोध ने रिडबर्ग ईआईटी सिग्नल की संवेदनशीलता पर इसके लाभकारी प्रभाव को प्रदर्शित किया।

अनुसंधान के निहितार्थ:

- पारंपरिक मैग्नेटोमेट्री के विपरीत, जो अक्सर क्रायोजेनिक रूप से ठंडे उपकरणों या अल्ट्रा-हाई वैक्यूम स्थितियों पर निर्भर करती है, यह कमरे के तापमान की विधि विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए अधिक सुलभ है।
- चुंबकीय क्षेत्र परमाणुओं के ऊर्जा स्तरों को प्रभावित करते हैं। इन क्षेत्रों के संपर्क में आने पर, ऊर्जा स्तर बदल जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई संचरण शिखर बनते हैं। इन शिखरों के पृथक्करण का उपयोग चुंबकीय क्षेत्रों को सटीक रूप से मापने के लिए किया जा सकता है, जिससे जटिल शीतलन तकनीकों की आवश्यकता के बिना सटीक मापन संभव हो जाता है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- **भूभौतिकी:** खनिज भंडारों की पहचान और भूवैज्ञानिक संरचनाओं की समझ में मदद करता है।
- **मेडिकल इमेजिंग:** मस्तिष्क गतिविधि की निगरानी और सहायक निदान में सहायक होता है।
- **अंतरिक्ष अन्वेषण:** अंतरिक्षीय स्थानों में चुंबकीय क्षेत्र को मापने के लिए उपयोग किया जाता है।
- **पुरातत्व:** दफन संरचनाओं और कलाकृतियों का पता लगाने में सहायता करता है।

निष्कर्ष:

मैग्नेटोमेट्री का एकीकरण परमाणु घड़ियों और मैग्नेटोमीटर में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। डॉपलर प्रभाव का लाभ उठाकर और व्यावहारिक सेटअप में संवेदनशीलता बढ़ाकर, यह शोध नेविगेशन, दूरसंचार और विमानन के लिए आवश्यक समय-निर्धारण और चुंबकीय क्षेत्र माप में बेहतर परिशुद्धता में योगदान करता है। इन क्वांटम प्रौद्योगिकियों के निरंतर अन्वेषण से मौलिक विज्ञान और अनुप्रयुक्त अनुसंधान दोनों में नए अवसर खुलने की उम्मीद है।

पॉवर पैक्ड न्यूज

विश्व चैम्पियनशिप 2024

2024 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप 28 से 31 अक्टूबर 2024 तक तिराना, अल्बानिया में आयोजित की गई। 2024 पेरिस ओलंपिक खेलों में भाग लेने वाले एथलीटों को प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति नहीं थी। भारत ने इस साल कुश्ती में पहले ही दमदार प्रदर्शन किया है, जिसमें चिराग चिक्कारा ने अंडर 23 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में पुरुषों की 57 किलोग्राम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

04 November 2024

अंडर-23 विश्व चैंपियनशिप 2024 में भारतीय पदक विजेता:

- » चिराग चिक्कारा - स्वर्ण (पुरुष फ्रीस्टाइल 57 किग्रा)
- » अंजली - रजत (महिला फ्रीस्टाइल 59 किग्रा)
- » शिक्षा - कांस्य (महिला फ्रीस्टाइल 65 किग्रा)
- » मोनिका - कांस्य (महिला फ्रीस्टाइल 68 किग्रा)
- » नेहा शर्मा - कांस्य (महिला फ्रीस्टाइल 57 किग्रा)
- » विश्वजीत मोरे - कांस्य (पुरुष ग्रीको-रोमन 55 किग्रा)
- » विक्की - कांस्य (पुरुष फ्रीस्टाइल 97 किग्रा)
- » सुजीत कलकल - कांस्य (पुरुष फ्रीस्टाइल 70 किग्रा)
- » अभिषेक ढाका - कांस्य (पुरुष फ्रीस्टाइल 61 किग्रा)

सी-295 के लिए टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स

हाल ही में, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने गुजरात के वडोदरा में C-295 विमान निर्माण के लिए टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन किया है। यह सुविधा भारत की 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' पहल में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो वैश्विक एयरोस्पेस निर्माण में देश की बढ़ती भूमिका को उजागर करती है।

परियोजना की मुख्य विशेषताएँ:

- **भागीदारी:** टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड (TASL) इस 'मेक इन इंडिया' परियोजना के लिए एयरबस के साथ सहयोग कर रही है।
- **उत्पादन:** यह सुविधा भारतीय वायु सेना के लिए 56 C-295 विमान बनाएगी, जिनमें से 40 स्थानीय रूप से असेंबल किए जाएँगे और 16 स्पेन से डिलीवर किए जाएँगे।
- **स्वदेशी विनिर्माण:** यह परिसर 18,000 विमान भागों के उत्पादन का समर्थन करेगा, जो पूरे भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSME) के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेगा।

रायगढ़ किला

- हाल ही में, राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह के हिस्से के रूप में, भारतीय इतिहास और सैन्य नवाचार में शिवाजी महाराज के योगदान का सम्मान करते हुए, रायगढ़ किले की प्रतिकृति प्रदर्शित की गई।
- रायगढ़ किला छत्रपति शिवाजी महाराज के अधीन मराठा साम्राज्य की राजधानी के रूप में कार्य करता था। अपने सामरिक महत्व और स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध, किले को 'भारत के मराठा सैन्य परिदृश्य' के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा दिया गया है।
- मराठों द्वारा रायगढ़ को 1653 में मोरेस से कब्जा किए गया था, रायगढ़ 1674 में शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के बाद राजधानी बन गया।

रायगढ़ की विशेषताए हैं:

- **राजसदर (सार्वजनिक दर्शकों का हॉल):** शिवाजी महाराज के दरबार का स्थल, जो अपने ध्वनिक डिजाइन के लिए प्रसिद्ध है।
- **रॉयल कॉम्प्लेक्स:** इसमें रनिवास, नक्कारखाना और सुंदर टॉवर शामिल हैं, जो मराठा शासन की भव्यता का प्रतीक हैं।
- **मंदिर:** जगदीश्वर मंदिर और शिवाजी महाराज की समाधि महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल हैं।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

17वां शहरी गतिशीलता भारत (यूएमआई) सम्मेलन और प्रदर्शनी 2024

हाल ही में, भुवनेश्वर को 17वें शहरी गतिशीलता भारत (यूएमआई) सम्मेलन और प्रदर्शनी 2024 में 'सर्वश्रेष्ठ सार्वजनिक परिवहन प्रणाली वाला शहर' के रूप में मान्यता दी गई है, जबकि श्रीनगर को सर्वश्रेष्ठ गैर-मोटर चालित परिवहन प्रणाली वाले शहर का पुरस्कार मिला है। 17वें यूएमआई सम्मेलन और प्रदर्शनी 2024 का आयोजन आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा किया गया था

- **कुछ अन्य उल्लेखनीय विजेता:**
  - » सबसे अधिक टिकाऊ परिवहन प्रणाली वाला शहर: कोच्चि
  - » सबसे अच्छी सुरक्षा और संरक्षा प्रणाली और रिकॉर्ड वाला शहर: गांधीनगर
  - » सबसे अच्छी बुद्धिमान परिवहन प्रणाली (आईटीएस) वाला शहर: सूरत
  - » सबसे अच्छी मल्टीमॉडल एकीकरण वाली मेट्रो रेल: बेंगलुरु
  - » सबसे अच्छी यात्री सेवाओं और संतुष्टि वाली मेट्रो रेल: मुंबई
- केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने 18वें शहरी गतिशीलता भारत (यूएमआई) सम्मेलन और प्रदर्शनी 2025 के आयोजन स्थल के रूप में गुरुग्राम, हरियाणा की घोषणा की।